व्याख्यान-16 का शेष

जानकारी मिलती है वह पहला सातवाहन शासक था जिसने अपने नाम के साथ अपनी माता के नाम भी जोड़े। जिसके कारण बाद के शासक भी अपनी नाम के साथ अपनी माता का नाम जोड़ा। इससे भी पता चलता है कि इस समय से राज्य में मातृसत्तात्मक समाज का उत्थान हो रहा था। जोगलथम्बी (नासिक, महाराष्ट्र) से कुछ चाँदी के सिक्के मिले हैं जो मूलरूप से शक शासक नहपान के हैं लेकिन उसपर गौतमी पुत्र शातकर्णी के नाम पुनः अंकित है। इससे इतिहासविदों का यह मत निकलकर सामने आया है कि गौतमी पुत्र शातकर्णी सम्भवत शक शासक नहपान को हराया होगा और वहाँ से प्राप्त ~~चाँदी~~ नहपान के चाँदी के सिक्कों पर अपना नाम पुनः अंकित करवाया होगा। गौतमी पुत्र शातकर्णि के पुत्र वाशिष्ठी पुत्र पुलमावी के नासिक गुहा लेख में भी उसे कई युद्धों का विजेता, शत्रुओं का संहारकर्ता कहा गया है। इसमें शक, यवन तथा पहलवों का नाश कर सातवाहन वंश की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने वाला बताया गया है।

अपनी सफलताओं से उत्साहित होकर गौतमी पुत्र ने दक्षिण तथा उत्तर भारत के कई क्षेत्रों को जीत कर अपनी साम्राज्य सीमा में वृद्धि की। उसके साम्राज्य सीमा उत्तर में मालवा तथा काठियावाड़ से लेकर दक्षिण में कृष्णा नदी तक तथा पूर्व में विदर्भ से लेकर पश्चिम में कोंकण तक का प्रदेश गौतमी पुत्र

Scanned with CamScanner

शातकर्णी के प्रत्यक्ष अधिकार में था। आभिलेखों (नासिक) से पता चलता है कि गौतमी पुत्र के अश्वों ने तीनों समुद्र (बंगाल की खाड़ी, अरब सागर, हिन्द महासागर) का जल पिया था। यह अतिरंजित प्रतीत होता है लेकिन इससे यह स्पष्ट होता है कि गौतमी पुत्र एक दिग्विजयी सम्राट था जिसके काल में सातवाहन साम्राज्य अपनी पराकाष्ठा पर थी। गौतमी पुत्र नासिक जिले में वेणाकटक नामक नगर बसाया था। वह क्षत्रियों के दर्प को चूर्ण करने वाला एक क्षत्र शासक था जिसने राजराज, महाराज, स्वामी आदि की उपाधियाँ धारण किया।

गौतमी पुत्र युद्ध काल में जितना बड़ा विजेता था शांति काल में वह उतना ही प्रजा-हितकारी शासक था। उन्होंने अपने विशाल साम्राज्य का प्रशासन अति कुशलता पूर्वक संचालित किया। उसने धर्म के अनुसार शासन किया तथा उसने प्रजा पर अन्याय पूर्ण कर (Tax) नहीं लगाया। वह समाज में वर्णाश्रम धर्म को प्रतिष्ठित किया। अपने राज्य काल के अंत में उसने अपनी माता के साथ मिलकर शासन किया।

गौतमी पुत्र का शासन काल दक्षिणापथ में वैदिक (ब्राह्मण) धर्म के पुनरुत्थान का काल माना जाता है। नासिक प्रशस्ति में उसे वेदों का आश्रय-~~दाता~~ तथा अद्वितीय ब्राह्मण कहा गया है। वह वैदिक धर्म का पोषक होते हुए भी एक धर्म सहिष्णु शासक था।

Scanned with CamScanner

वह बहुमुखी प्रतिभा का धनी शासक था। उसे सम्पूर्ण शास्त्रों की शिक्षा दी गई थी। इसप्रकार वह एक विद्वान शासक था। नासिक अभिलेख में कहा गया है कि उसका शरीर स्वस्थ, बलिष्ठ तथा सुन्दर था। मुख कांतिमय तथा व्यक्तित्व आकर्षक था। वह ~~मात~~ मातृभक्त था तथा साधारण अपराध करने वाले को क्षमा प्रदान करने वाला शासक था।

उसके शासन काल के बारे में इतिहासविदों में मतान्तर है लेकिन कुछ अभिलेखों आदि के आधार पर हम मोटे तौर पर कह सकते हैं कि उसका शासन काल 106 ई० से 130 ई० के बीच रहा था अर्थात करीब 24 वर्षों तक उसने शासन किया।

उपर्युक्त वर्णनों के आधार पर कहा जा सकता है कि गौतमी पुत्र शातकर्णि एक महान शासक था, जिसने विकट स्थिति से अपने साम्राज्य को निकाल कर एक प्रतिष्ठित राज्य में स्थापित किया। वह अपने राजवंश के सबसे प्रतिभाशाली शासक रहा। जिसके कार्यकाल ~~में~~ सातवाहनों के साम्राज्य ~~सीमा~~ सीमा ~~व~~ सर्वाधिक बड़ी रही थी।